Vol 4 Issue 4 Jan 2015

ISSN No : 2249-894X

Monthly Multidisciplinary Research Journal

Review Of Research Journal

Chief Editors

Ashok Yakkaldevi
A R Burla College, India

Flávio de São Pedro Filho
Federal University of Rondonia, Brazil

Ecaterina Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest

Kamani Perera
Regional Centre For Strategic Studies, Sri Lanka

Welcome to Review Of Research

RNI MAHMUL/2011/38595 **ISSN No.2249-894X**

Review Of Research Journal is a multidisciplinary research journal, published monthly in English, Hindi & Marathi Language. All research papers submitted to the journal will be double - blind peer reviewed referred by members of the editorial Board readers will include investigator in universities, research institutes government and industry with research interest in the general subjects.

Advisory Board

Flávio de São Pedro Filho
Federal University of Rondonia, Brazil

Kamani Perera
Regional Centre For Strategic Studies, Sri Lanka

Ecaterina Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest

Fabricio Moraes de AlmeidaFederal
University of Rondonia, Brazil

Anna Maria Constantinovici
AL. I. Cuza University, Romania

Romona Mihaila
Spiru Haret University, Romania

Delia Serbescu
Spiru Haret University, Bucharest, Romania

Xiaohua Yang
University of San Francisco, San Francisco

Karina Xavier
Massachusetts Institute of Technology (MIT), USA

May Hongmei Gao
Kennesaw State University, USA

Marc Fetscherin
Rollins College, USA

Liu Chen
Beijing Foreign Studies University, China

Mabel Miao
Center for China and Globalization, China

Ruth Wolf
University Walla, Israel

Jie Hao
University of Sydney, Australia

Pei-Shan Kao Andrea
University of Essex, United Kingdom

Loredana Bosca
Spiru Haret University, Romania

Ilie Pintea
Spiru Haret University, Romania

Mahdi Moharrampour
Islamic Azad University buinzahra
Branch, Qazvin, Iran

Titus Pop
PhD, Partium Christian University, Oradea,
Romania

J. K. VIJAYAKUMAR
King Abdullah University of Science & Technology,Saudi Arabia.

George - Calin SERITAN
Postdoctoral Researcher
Faculty of Philosophy and Socio-Political Sciences
Al. I. Cuza University, Iasi

REZA KAFIPOUR
Shiraz University of Medical Sciences
Shiraz, Iran

Rajendra Shendge
Director, B.C.U.D. Solapur University, Solapur

Nimita Khanna
Director, Isara Institute of Management, New Delhi

Salve R. N.
Department of Sociology, Shivaji University, Kolhapur

P. Malyadri
Government Degree College, Tandur, A.P.

S. D. Sindkhedkar
PSGVP Mandal's Arts, Science and Commerce College, Shahada [M.S.]

Anurag Misra
DBS College, Kanpur

C. D. Balaji
Panimalar Engineering College, Chennai

Bhavana vivek patole
PhD, Elphinstone college mumbai-32

Awadhesh Kumar Shirotriya
Secretary, Play India Play (Trust),Meerut (U.P.)

Govind P. Shinde
Bharati Vidyapeeth School of Distance Education Center, Navi Mumbai

Sonal Singh
Vikram University, Ujjain

Jayashree Patil-Dake
MBA Department of Badruka College Commerce and Arts Post Graduate Centre (BCCAPGC),Kachiguda, Hyderabad

Maj. Dr. S. Bakhtiar Choudhary
Director,Hyderabad AP India.

AR. SARAVANAKUMARALAGAPPA
UNIVERSITY, KARAIKUDI,TN

V.MAHALAKSHMI
Dean, Panimalar Engineering College

S.KANNAN
Ph.D , Annamalai University

Kanwar Dinesh Singh
Dept.English, Government Postgraduate College , solan

More.........

Address:-Ashok Yakkaldevi 258/34, Raviwar Peth, Solapur - 413 005 Maharashtra, India
Cell : 9595 359 435, Ph No: 02172372010 Email: ayisrj@yahoo.in Website: www.ror.isrj.org

Review Of Research
ISSN:-2249-894X
Impact Factor : 3.1402(UIF)
Vol. 4 | Issue. 4 | Jan. 2015
Available online at www.ror.isrj.org

सिन्धु संस्कृति के स्थल धोलाबिरा का ऐतिहासिक अवलोकन

Chandrikasinh Somvanshi[1] and Jashwantkumar Premjibhai Chandhari [2]

[1]Research Scholor,Teacher's Fellowship in History , Adipur (Kutch).
[2] Lunawadd, Panchmahal, (Gujarat)

सारशं : विशेषताः एक अध्ययन –

भृगु ऋषि के नाम पर जाना जाने वाला 'कच्छ' प्रदेश दुनिया के नक्शे में सबके ऊपर है द्य कच्छ की पवित्र भूमि में धोलाबिरा नगर की ऐतिहासिक विशेषता अपने आप में एक मिशाल है वैदिक सरस्वती ईबोलुयशन हिस्ट्री ऑफलोस्ट रिवर ऑफ नोर्दन इण्डिया Ed-By डॉ.बी.पी. राधाकृष्णा और डॉ. एस एस मेरह नामक पुस्तक 'जियोलोजिकल सोसायटी ऑफइण्डिया, 'बेंग्लोर द्वारासन 1990 ई.में प्रकाशित हुआ था | जिसमें ड्रेईनिज ईबोलुयशन ऑफ नार्थ दि बेस्टर्न इण्डिया विथ पर्टीकुलररेफरेन्स टु दि लोस्ट रिवर(नदी सरस्वती) सरस्वती के नाम पर सेमिनार आयोजित हुआ था सन् 1999 में | जिसमे ३१ (इक्तिस विद्वानो) विद्वानो ने भाग लेकर काम किया था | इस पुस्तक के काफी पन्नों में कच्छ के धोलाबीरा के सन्दर्भ में सेटेलाइट ईमजरी के ऊपर से अध्ययन करके एक नक्शा भी तैयार किया गया था द्य इसमें निम्नलिखित तत्थों का खुलासा हुआ था।

प्रस्तावना :

धोलाबीरा का काल –

कच्छ की "पवित्र भूमि में धोलाबीरा शहर" की ऐतिहासिक विशेषता राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय स्तरों पर महत्व की रही है। भुकम्प समुन्द्री तूफान, झन्झा इकोर हवाऍ बारिस, बवाण्डर तूफान इत्यादी का बहुत प्रकृति प्रकोप ने एक साथ इस सिन्धु संस्कृति वाले इस उच्च कोटिय नगर धोलाबीरा को निगल लिया । नदियों की तलहटियों कें कछारों सें लायें हुए हजारों लाखों टन मिटटी धोलाबीरा नगरी कें उपर जम गयें और यह उच्चकोंटी की सिन्धु संस्कृति वाला धोलाबीरा उसमें दमन हों गया और एक उँचें टीलें कें अन्दर दबी हुआ सिन्धु संस्कृति कें महातनम नगर 'धोलाबीरा' को 'मटके' के अवशेष के रूप में सर्वरप्रथम पहचाना और पहल किया आर्किओलाजिकल सर्वे ऑफ इण्डिया, गुजरात सरकार के भुज शाख को दी। वैसे कच्छ में सन् 1969 ई. में पुरातत्व शास्त्र विभाग के उत्खनन विभाग, दिल्ली ने शोधकार्य का श्रीगणेश किया था। सुरकोटडा में बडी नदी (द्रशवती) थी जिसका डेल्टा नाम आच्छान्दित जीम के नीचे है। जिसे हम सिन्धु संस्कृति के नाम से जानते हैं वास्तविकता तो यह है कि वह सचमुच में सरस्वती संस्कृति है। सर्वप्रथम सिन्धु नदी के किनारे इन जगहों को ढूँढा गया, इसी कारण से इसका नान सिन्धु संस्कृति पड़ा। पीछे से सिन्धु संस्कृति भी मिली, प्रमाणों के आधार पर इस संस्कृति का जब उजाड हुआ तो टीलाओं गॉवों सेटेलाईट मेपिंग सर्वेक्षण पद्धति के द्वारा ज्यादा राजस्थान में सीकर और हनुमानगढ़ जिले में 46+26, उत्तर प्रदेश के सहारनपुर जिले में और भेरठ में 31, हरियाणा, अम्बाला, कुरुक्षेत्र, जिन्द्रा सोनीपत, रोहतक, भिवानी, हिसार, जिला में 44, पंजाब के अमृतसर, कपूरथला, जलन्धर, रोपर, पटियाला, सांगुर, लुधियाना, फरीदकोट, फिरोजपुर, भटिन्डा, जिलों में 35, गुजरात कच्छ जिले में 30, बनासकांठा में 3, महेसाणा जिले में 16, जामनगर जिले में 10, अहमदाबाद जिले में 8, खेड़ा जिले में 2 और भरूच जिले में से हैं। कुल मिलाकार (गुजरात भर में 100 स्थल हैं) 285 जगह शामिल होते है। 'बैदिक सभ्यता' अर्थात बैदिक बेदों का समय 8000 से 10,000 वर्षों के बीच का माना जाता है। इन दो हजार वर्षों के अन्तराल के समय बैदिक, का काल माना जाता है। उसके बाद का समय 5000 से 8000, और 2500 से 5000 वर्ष के समय के बीच और आज से 2500 वर्ष पहले महात्मा गौतम बुद्ध के जन्म के बाद के समय में सरस्वती नदी उत्तर–पश्चिम भारत में बहती थी। भूकम्पों के कारण इनमें परिवर्तन आया। हवामान और सुनामी जैसे भंयकर तूफानों ने इस समस्त नदियों को तोड़ मरोड़कर उसकी धाराओं को रौंद डाला। और इतना रौंदा कि बहुतों का तो नाम हीं मिट गया। इन कुदरती प्रकोपों के कारण सिन्धु और सरस्वती नदियों के कगारों पर बसे हुए सुन्दर–सुन्दर प्राचीनतम् महान् नगरों को एक साथ आये हुए समुद्री (भयंकर सुनामी) भूकम्पों, तूफानों, नदियों की बाढों, सूखी हवाओं इत्यादि ने निगल लिया और इतना ही नहीं उन नगरों पर हजारों, लाखो टन मिट्टी, जो नदियों के मुहानों और समुद्री कछारों से लाई गयी थी, एक ऊँचे टीले का रूप बना

दिया और इस तरह बहुत से अच्छे–खासे नगर लुप्त होते चले गये। काफी समयों के बाद में इन्हीं टीलों में से प्राचीनतम् नगरे, मोहनजोदड़ो और हड़प्पा चहुँदोहड़ो तथा 'धोलाबीरा' जैसे नगरों का श्री गणेश हुआ। इन टीलों में से मिट्टी के मिले हुए मोहरों के लिखावट के आधार पर विद्वानों ने इनका अर्थघटन किया है आज धोलाबीरा एक अर्न्तराष्ट्रीय दर्जा पा चुका है। 'सरस्वती सिविलाइजेशन दि हड़प्पन सील' में श्री नवरत्न ऐस. राजाराम के प्रवचन के अनुसार सिन्धु संस्कृति के मुहानों के पास मिले मुहरों और उन पर चित्रित–चित्रों और लिपियों का अर्थघटन करके आगे लिखा है कि यदुवंशी श्रीकृष्ण के मूलस्वरूप के रूप में आगे चलकर तमाम राजा हुए। महाराजा पुरू पाण्डवों के मूल पुरूष के रूप में, 10 जितने प्रदेशो को जीतने वाला प्रभावशाली राजा सुदाम और द्वारकापुरी के बैदिका के नाम श्री स्थल तथा प्लक्षागरा–सरस्वती नदी के उद्भव स्थान के नाम पर सरस्वती का एक नाम धरणीप्लक्षा भी था। दूसरे मुहर में 'शक्ता–बसा–समुंद्राह' और 'शक्ता ब्रारी हजयशाह' अक्षरों के स्पष्ट अर्थघटन अर्थात समुंद्र में गर्भ में समायी हुई द्वारिका पुरी, जो की समुंद्र के तल में भूकम्प अर्थात सुनानी के आने के कारण से हुआ और समुंद्र का पानी फिर से उबलने के कारण नाश हुआ।

महाभारत के मूशलपर्ब के अनुसार श्रीकृष्ण का द्वारका नगरी का नाश(विनाश) इसी समुन्द्र के पानी के उबाल के कारण विनाश हुआ। इस समय समुंद्र के तल में भंयकर भूकम्प आ जाने के कारण से समुंद्र का पानी ऊपर पृथ्वी पर जहॉ–तहॉ फैल गया और इस प्रकार द्वारिकापुरी को इन सुनामी लहरों ने अपने में निग लिया होगा। 2005 ई. में आये हुए सुनामी जैसे घटना का रूप धारण कर लिया। डॉ. झा और डॉ राजाराम ने इन तमाम तर्को के द्वारा ये सिद्व किया है कि धोलाबीरा आसपास के बन्दरगाहों, मीठे पानी के स्त्रोतों, अच्छी जमीन के ऊपर समुंद्र की लहरों के उठनें के कारण जमीन के ऊपर मिट्टी के जमाव से बड़े–बड़े टीलों के निर्माण का सम्भव लगता है। 'सिन्धु संस्कृति' या फिर 'हड़प्पन संस्कृति' सरस्वती नदी के सूख जाने के कारण इनका विनाश पानी के अभाव के कारण और खास करके सरस्वती नदी के सूख जाने के कारण इनका विनाश हुआ इस प्रकार समुंद्र के तूफानी लहरों के थपेडों ने और समुंद्री भूकम्प–हवामानों ने झंझा–झकोर प्रलयकारी बेगवती तूफानी हवाओं ने एक साथ मिलकर धोलाबीरा को निगल लिया। मुहरों पर उत्कृर्ण लेखों के ऊपर से इस बात की जानकारी मिलती है इस बात का खुलासा वहॉ पर लिखने की उत्कृर्ण लिपि अज्पित (मिश्र) (Egipt) सहित दुनिया भर के पुरानी से पुरानी संस्कृति का विनाश हुआ।

नदियों के सफाई होने से और क्षार (नमक) के आक्रमण के बढ़ने से तथा पर्यावरण में हुई भारी परिवर्तनों के कारण हड़प्पन संस्कृति का विनाश्झ हुआ हो गा। नदियों के सपाट होने के कारण से और क्षार (नमक) के कारण यह रहने लायक नहीं रह गये। उदाहरण के तौर पर हम मान सकते है कि 'हड़प्पन संस्कृति' के समय कच्छ के विशाल रण में कई आबादियॉ थी और कई नगरें भी थीं और भचाऊ तहसील के नज़दीक एक दूसरा हड़प्पन संस्कृति जो कि आज से लगभग 5000 वर्ष पहले बसा हुआ नगर था भचाऊ के पास में कानमेर नाम गॉव के पास धोलाबीरा जैसे नगर संस्कृति के समान बसी हुई थी। जिसे हम 'कानमेर सभ्यता' के नाम से जान सकते हैं। (गुजरात समाचार राजकोट से प्रकाशित दैनिक पत्रिका दिनांक 26.09.2005 के संदर्भ में' जिसमें पुरातत्व विभाग से उत्खनन के लिए मंजुरी मांगी गई काफी संभव है कि यहां पर सरस्वती नदी का मुहावना रहा होगा और धोलाबीरा जैसे उत्तम किसम के नगर जेसा यहां नगर रहा होगा।उन्नति शील नगर के रूप में रही थी। द्वारिका नगरी समुंद्र के भंयकर लहरों के लहरों में समा गयी। समुंद्र में भंयकर भूकम्पीय तूफान होने के कारण से समुंद्र ने भी धोलाबीरा जैसे प्राचीनतम नगर को भी निगल लिया हो गा। महासागर में सिन्धु, शतलज (शतद्रु) सरस्वती और द्रशदवा की नदियों का उल्लेख मिलता है। सिन्धु नदी अजय अमर है। बाकी की दूसरी नदियॉ एकाद् दो को छोड़कर बाकी की सभी लुप्त हो गयी है। विद्वानों का एक बहुत बड़ा भाग यह मानता है कि यह सभी नदियॉ अरब महासागर की कच्छ की खाड़ी में मिलती है। जिन–जिन रास्तों से यह नदियॉ कच्छ की खाड़ी में मिलती थी, वे सभी स्थल कच्छ का विशाल ही रण था। 'अलबता नदियों का मूलस्वरूप, उसके बदलाव के स्वरूप के बारे में अभी एक गॅूजता हुआ सवाल उठ खड़ा होता है। यह चारों बड़ी नदियॉ बारी–बारी से अरबी समुंद्र में मिलती थी और वे एक दूसरे के काफी नजदीक होकर बहती थी।

जमीन के स्तखन और क्षार (नमक) के कारण यह नदियॉ लुप्त हो गयी। बारम्बार भूकम्प और समुद्री तुफान के आने से उसके गुजरने के रास्तों का बदलाव तथा थार के रण की रेतीयों में आकर ये सारी नदियॉ खो जाती रही हैं। इस नदी के मुहाने के पास के डेल्टा प्रदेश की रचना करने में एक दूसरी नदियों का काफी बड़ा योगदान रहा है। कच्छ के मोटे रणके उत्तरी भाग में तीन नदियों शतलज, सरस्वती, द्रशद्वी का उदभव हुआ। मुहाने का डेल्टा प्रदेश एक के साथ गुॅथा हुआ है। रेतों की पहाड़ियों के कारण वे नदियॉ एक दूसरे से अलग पड़ती चली गई थीं। नैर्ऋत्य, दक्षिण और अग्निकोण की तरफ बहने वाली छोटी–छोटी नदियॉ कोरी क्रीक अचानक 'अल्लाह बॉध' के कारण उनका रास्ता रूक गया। पश्चिम की तरफ सिन्धु प्रदेश तक एक बहुत बड़ा भू भाग मूलभूत डेल्टा प्रदेश का था। पूर्व में लूणी नदी के मुख तक और दक्षिण में 40–50 कि.मी. तक कच्छ की पथरीली भूमि इस डेल्टा के प्रदेश में फैला हुआ था। वास्तव में वन्नी प्रदेश के मैदान इस डेल्टा प्रदेश का ही एक नाम है। नगर पारकर हिल (पहाड़ी) के पश्चिम तरफ यह एक दूसरा डेल्टा प्रदेश का अवशेष है जो इसके ईशाण की कोण तरफ लंबाई में है वही लूणी नदी थी। वह शाखा–सुकारी के अवेशष हो सकते है काफी सम्भव है कि यह प्राचीन काल में सरस्वती नदी के किनारे–किनारे पर मान और उससे संबंधित रहने के निवास और नगरों का विकास होता चला गया। भूकाल में काफी सम्भव है कि सरस्वती नदी के किनारे–किनारे प्राचीन समय में बस्तियॉ और नगर बनते चले गये। धोलबीरा का आदिम–मानव जिसके पैर के चिन्ह मिले हैं।

इस बात की पृष्टि आदिमानव की बस्तियों के अवशेषों के द्वारा मानवशास्त्र जैसे विषय के अर्न्तगत, इसकी पुष्टि हो चुकी हैं अतः इस संस्कृति को हम 'सरस्वती संस्कृति' के नाम से पुकार सकते है। कच्छ के धोलाबीरा नगर में जब से सिन्धु संस्कृति के अवशेष प्राप्त होने लगे है तब से अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर कच्छ को प्रसिद्धी प्राप्त होने लगी है। हाल ही में जब अमेरिक के राष्ट्रपति भारत भ्रमण पर आने वाले थे, तब उनके दौरे में धोलाबीरा नगर का भ्रमण भी शामिल था। इससे इस नगर की महत्वता जानी जा सकती है। हॉलाकि किसी कारणवश श्री क्लिंटन की यात्रा नहीं हो सकी, किन्तु भविष्य में वे जब भी आएगें तब धोलाबीरा जरूर

आएगें, यह निश्चित है। कच्छ में से लगभग 50–60 स्थानों से सिंधु संस्कृति के अवशेष प्राप्त हुए है, किंतु अब तक प्राप्त हुए इन सभी में अति प्राचीन तथा व्यवस्थित नगर रचना तो एक मात्र धोलाबीरा को ही माना जा सकता है। अन्य स्थानों पर से तो मात्र कुछ अवशेष सिक्के आदि ही प्राप्त हुए है। किंतु धोलाबीरा में से सिन्धु संस्कृति को उजागर करने वाला सम्पूर्ण नगर का ढाँचा मिला है। प्राचीन काल की यह नगर रचना चलता रहेगा, गुजरात के पुरातत्वशास्त्री डॉ. रघुबीरसिंह रावत की अध्यनता से। यह सभ्यता भी धोलाबीरा जैसी है।

प्रथम उत्खनन–

आज से लगभग 27–28 वर्ष पूर्व जब पाकिस्तान भारत की हिन्दु संस्कृति का नाश करने के लिए ई. सन् 1971 में भारत समक्ष युद्ध घोषित करके बोम्ब वर्षा करने लगा। उसी समय हिन्दू संस्कृति को मूल इस कच्छ की भूमि में से बाहर आने लगा, ओर यह इतने गहरे निकले कि समग्र दुनिया को पता चला कि हिन्दू (सिंधु) अर्थात सरस्वती संस्कृति यह दुनिया का सबसे प्राचीन संस्कृति है। खडीर यह कच्छ का एक ऐसा भाग है जो चारों तरफ रण से घिरा हुआ है। इस रण में एक टापू है। इस भाग में धोलाबीरा नामक एक गॉव बसा हुआ है। यह गॉव कच्छ के अन्य तमाम शहरों व विकसित भागों से बहुत दूर स्थित है। इससे यहां के लोगों की सामान्य रोजी–रोटी खेती है। अन्य कोई साधन न होने से सरकार की तरफ से लोगों को रोजी रोटी मिलती रहे, इसके लिए अकाल के समय राहत कार्य चलाए जाते है; तथा ई. सन् 1970–71 में जब धोलाबीरा के तलाब पर राहत कार्य चालु था, तब वहाँ काम पर देखरेख कर रहे श्री शंभूदान गढ़वी को मटके के पुराने चित्र वाले ठीकरे मिले और एक हड़प्पन मुद्रा मिली। यह मुद्रा अति प्राचिन लगने से इस जगह पर अधिक खुदाई करवाई गई। जहॉ और अधिक अवशेष मिलने पर भुज के पुरातत्व विभाग को जानकारी दी गई। ई. सन् 1970 से 1993 के बीच हुआ। यह कार्य श्री बिस्ट व उनके साथियों द्वारा किया गया। जिससे तीन हिस्सों में बसा यह विराट सिंधु संस्कृति का नगर प्राप्त हुआ। समग्र देश में यह हड़प्पन संस्कृति की सबसे बड़ी खोज है।

अंत मैं अर्थात लेखक डॉ. (प्रो.) चन्द्रिकासिंह सोमवंशी अपने संशोधात्मक रिसर्च पेपर में ये बात कहना चाहुँगा की धोलाबीरा जैसे खूब विकसित नगर को भयंकर समुंद्री भूकम्प, झन्झा झकोर हवाओं ने, मूशलाधार बारिशो ने और भंयकार बवन्डरों इत्यादि ने मिलकर इस विख्यात नगर को निगल लिया। मेरे मतानुसार यह नगर कच्छ के विशाल थर के रण में स्थित ये धोलाबीरा नगर सरस्वती जैसे विशाल नदी के मुहाने पर बसी हुई थी यह ''सरस्वती नदी हिमालय से निकलकर पंजाब हरियाणा के इलाके से होती हुई राजस्थान के थर प्रदेश से गुजरती हुई गुजरात के कच्छ प्रदेश के विशाल थर के रण में खो जाती है।'' कच्छ में पाये गये धोलाबीरी जैसे नगर की एक ऐतिहासिकउ विशेषता यह है कि वह सरस्वती संस्कृति नदी के कगार पर बसी हुई थी जिसे हम 'सरस्वती संस्कृति' के नाम से पुकार सकते है। यही एक ऐसी नदी है जो चाहकर भी सागर संगम अर्थात अरब महासागर में नहीं मिल पाती। विद्वानों ने इस नदी को 'कुँबारी नदी' अर्थात बिना 'मॉग भरी नदी' के रूप में पुकारा है। ऐसी सरस्वती संस्कृति और ऐसे विशालतम धोलाबीरा नगर को लेखक अपने कर–कमलों के द्वारा बारम्बार इस पवित्र–पावन भूमि जिसमें यह सभ्यताएं पनपी, फली–फूली और विकसित हुई, उन्हें बारम्बार नमन् करता है! नमन् करता है!! नमन् करता है!!!

उत्खनन का अंदाजित विस्तार –

मिट्टी के नीचे दबा यह नगर लगभग एक से डेढ़ कि.मी. में फैला हुआ है 770 मीटर पूर्व पश्चिम तथा 616 मीटर उत्तर–दक्षिण लंबाई चौड़ाई वाले किले के बीच तीन भाग में बसा यह विशाल नगर इतना व्यवस्थित है कि आज की औद्योगिक नगरियों को पीछे छोड देता है। इस स्थल की दूरी मूख्य नगर भुज से रापत 135 कि.मी. है तथा वहाँ से धोलाबीरा 95 कि.मी. है पक्की सड़क है। धोलाबीरा से 3 कि.मी. कच्चा रास्ता है जो इस नगर में पहुंचाता है। भूतकाल को देखते हुए ऐसा अनुमान लगाया जा सकता है कि लगभग डेढ़–दो लाख वर्ष पूर्व सम्पूर्ण कच्छ समुद्र में विलिन अवशेष प्राप्त हो रहे हैं। जीवानल की शुरुआत में मनुष्य आदिममानव की जिंदगी बसर करता हो गा गुफाओं पत्तों की छाल को, जानवरों के चमड़ो को, मकान, वस्त्र, के रूप में अपनाता हो गा। इसके हजारों वर्ष पश्चात जो संपूर्ण प्रगति की शुरूआत हुई उसमें पक्के मकान, मनोरंजन की सुविधा व्यापार तथा अन्य सुविधाओं सहित का शहर धोलाबीरा। यह वास्तव में अतिप्राचीन नगर रचना का नमूना है।

सिंधु संस्कृति के अवशेष–

मोहनजोदड़ो हड़प्पा, रापरगठी पाबुमढ, नानीरायण, नेत्रा कुरून एवं कानमेर की सभ्यता व नवीनाल सौराष्ट्र वगैरह स्थानों से सिंधु संस्कृति के अवशेष मिले है कच्छ मे लगभग 55 से 60 जगहों से अवशेष प्राप्त हुए है। किन्तु यह सभी ग्राम्य अवशेष हैं ऐसा प्रतीत होता है। किंतु मात्र धोलाबीरा ही एक नगर या शहर है इतना विशाल विस्तार है। जिसमें राज्य के व्यवस्थापक का महेल तथा किला है। नहाने का हौज, पानी एकत्रित करने के टेंक, पानी नगर तक पहुँचाने के लिए नहरें, दुकान, व्यवस्थित मकान, मनोरंजन के मैदान, मिट्टी के पांच–छः आकार के बर्तन, मणका, मिट्टी के पत्थर यहॉ तक की उस समय के आदिम–मानव (मनुष्य)के पैर के निशान आदि धोलाबीरा से प्राप्त हुए है।

धोलाबीरा की नगर रचना–

इस शहर की किलो बन्दी की ओर विशेष ध्यान आकर्षित करती है। महेल को मजबूत किले से सुरक्षित किया गया है

दूसरा किला इस महेल व उपरी नगर की सुरक्षा के लिए बनाया गया है। पॉच हजार वर्ष पूर्व भी इस नगर को दूश्मनों के हमले से सुरक्षित रखने की दृष्टि से संपूर्ण सावधानियॉ रखी गई थी। महेल में पानी की एक बड़ी टंकी है। जिसमे से विशाल नाले द्वारा नदी का पानी लाने की सुविधा है, तथा आगे नाला भूगर्भ में होने के बावजूद की किला बंध होने पर भी पानी का प्रवाह चालू रहता है। नहाने के लिए एक बड़ा हौज है। किले के मध्य में उपर की और एक विशाल मैदान है, जो शायद मनोरंजन व खेलकूद की दृष्टि से बनाया गया हो गा। मैदान की एक ओर महेल में बैठे लोग व दूसरी तरफ नगरजन बैठ सके, इस तरह की एक उच्च कोटी की व्यवस्था है महेल से कुछ की दूर ऊपरी नगर है जिसमें व्यापारी व धनवान लोग रहते हों गे। सम्पूर्ण नगर में सुंदर सी गटर व्यवस्था है। अलग–अलग व्यवसायों की दूकानों की कतारें भी देखी गई है। इसके अलावा नगर से दूर गरीब व नौकरी वर्ग के लोगों की बस्ती होने का अनुमान होता है। जिसे निचला नगर कहते है। यहॉ कच्चे–पक्के छोटे–बड़े मकान देखने को मिलते है। यहॉ भी गंदे पानी की व्यवस्था ऊपरी नगर जैसी ही है इसके अलावा यहां से हथियार, मनके, सोने के आभूषण हड़प्पीय मुद्राएं, तौलमाप के साधन प्राप्त हुए है। किन्तु आश्चर्य जनक बात यह है कि किसी भी देव या देवी का मंदिर या प्रार्थना स्थल नहीं मिला है, जिससे सिंधु–संस्कृति के लोग अद्वैत या शिव के परम–ब्रमह के उपासक हो गें. ऐसा अनुमान लगाया जा रहा है।

तदुपरांत यहॉ के समाधिस्थान ऊपर दक्षिण की तरफ और पूर्व–पश्ख्मि व इर्शान नेऋत्य की ओर आई हुई मिली है। जो यहॉ कि अलग बस्ती का सूचन करती है। यहॉ पर मानव अवशेषों के स्थान पर बर्तन निकले हैं, जिससे ऐसा माना जा सकता है कि अग्नि संस्कार के बाद राख गाढ़ने की प्रथा होगी। किन्तु महेल के अन्दर पाई हुई पानी की टंकी के उपर खुदाई कार्य के दरम्यान एक संपूर्ण हाडपिंजर पद्मासन की स्थिति दशनामी गोस्वामी (गोसाई) समाज के पुरुष व्यक्ति का स्वर्गवास हो तब उनकी समाधि के साथ रखी जाती है। समाधि दिलाने कि प्रथा रही हो गी। उसे जलाया नहीं जाता हो गा अथवा यह हाडपिंजर सिंधु–संस्कृति के अमुक समय बाद का भी हो सकता है। कुछ विद्वानों का ऐसा मानना है कि यह नदी किनारे बसा हुआ महाबंदरगाह है। किन्तु अभी समुद्री बंदरगाह के अवशेष नहीं मिले जैसे कि लंगर, बडापोर्ट आदि। मगर छोटी पोर्ट जैसा कुछ है। इसके धोलाबीरा में से मिला है। ''धोलाबीर नगर बैदिक नदी 'सरस्वती नदी' के मुहाने पर बसा रहा हो गा। डॉ. (प्रो.) चन्द्रिकासिंह सोमवंशी, रिसर्च स्कॉलर, जो कि इस प्रोजेक्ट के लेखक है उनका भी यह मानना है कि धोलाबीरा नगर सरस्वती नदी के मुहाने पर बसा हुआ था।''

शिल्प स्थापत्य कला

शिल्प स्थापत्य में महेल के दरवाजे की सुन्दर मकान, दोनों ओर के पत्थरों की खुदाई महेल के स्तम्भ के सुन्दर गोल, चौरस आदि अलग–अलग प्रकार के व्यवस्थित घिसे हुए पत्थरों के बीच छेद किए हुए जो स्तम्भ को खडें करते हुए एक दूसरे को छेद से जोड़कर मजबूताई बढ़ाई जा सके पत्थरों की मात्र मिट्टी के गारे से ही जोड़कर सम्पूर्ण नगर की रचना की गई है। सीमेन्ट या चूने के उपयोग के बिना ही वर्षो से टिके हुए है ये नगर। नदी के किनारे के तथा हिमालय के देवदार की लकड़ी का उपयोग के बिना ही वर्षो से टिके हुए है ये नगर। नदी के किनारे के तथा हिमालय के देवदार की लकड़ी का उपयोग छत, खिड़की, दरवाजे तथा जहाज आदि बनाने के लिए होता था। धातु में तांबे का उपयोग, पतरा, हथियार, आभूषण आदि बनाने के लिए होता था। चांदी, सीसा, सोना, बहुत कम प्रमाण में उपयोग में लाए जाते थे। सोना, सीसा, पत्थर, चांदी, शंख आदि में से बहने बनाए जाते थे। इन गहनों का निर्यात भी होता था। यहॉ आभूषण से लदी स्त्री की मूर्ति भी मिली है जो कि मातृ–पूजा होने का सबूत पेश करती है। मोहनजोदड़ों, चहुँदोहड़ों हड़प्पा आदि में भी मातृ–पूजा के साथ ही साथ लिंग पूजा एंव सोनि पूजा का भी प्रचलन रहा था। इसके अलावा सूती–कपड़े का सुंदर बाजार था और उसका आयात–निर्यात भी होता था जिसे ईराक के लोग सिंधु कपड़ा कहते, ग्रीक लोग इस कपड़े को सिंधन कहते थे, जिसका ग्रीक भाषा में उल्लेख है वह कपड़ा आज की खादी जैसा होता था। यहॉ के लोग मिट्टी के बर्तनों के अलावा बच्चों के लिए सुंदर खिलौने, जैसे कि गाड़ी, बैल, पक्षी, हाथी, घोड़ा आदि बनाते थे, जो आज भी कच्छ के प्रजापति जाति की विशिष्टता है, और रही है। बैलगाड़ी का खिलौना भी मिला है कच्छ में। जनवरी 1997 ई. से उत्खनन का गया स्तर शुरू होने में से खुदाई कार्य वाले पगठिए निकले है। सबसे महत्व की वस्तु कुॅआ है। चार मीटर के व्यास वाला कुॅआ प्राप्त हुआ है। जिससे साबित होता है कि आज के गॉवों में मिलने वाली कुॅओं की संस्कृति पॉच हजार वर्ष पहले की है और भी कई नए अवशेष प्राप्त हुए है।''

सरस्वती–संस्कृति का सबसे बड़ा ब्यास वाला कुॅआ धोलाबीरा की सभ्यता में ही मिला है। इस तरह कच्छ की धरती में छिपे इस ऐतिहासिक खजाने ने आज कच्छ को अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर प्रख्यात बना दिया है। रोज खुदाई कार्य दरम्यान कुछ नया खोजने की चेष्टा जारी है। भुज शहर से लगभग 250 कि. मी. दूर भचाऊ तालुका के मोठे रण के खडीरबेट के धोलाबीरा गॉव से 2 कि. मी. दूरी पर हड़प्पीय संस्कृति के अवशेष काफी मात्रा मे मिले हैं। हड़प्पीय संस्कृत का समकालीन बड़ा ही व्यवस्थित और प्राचीन नगर के टीले (टिबा) की खोज ई. सन् 1967 में हुई थी। इस टीले (टिबा) को व्यवस्थित रूप देने का श्रेय लोक कलाकार श्री शंभुदान गढवी को दिया जाता है। इनसे मेरी मुलाकात धोलाबीरा के सर्वेक्षण के दौरान हुई थी। गुजरात राज्य के पुरातत्व विभाग ने भी इस टीले का उत्खनन एवं सर्वेक्षण किया है। इसके बाद 'आर्कियोलोजिकल सर्वे ऑफ इण्डिया' के अधिकारियों ने भी संशोधन कार्य किया। सन् 1990 ई. में श्री रविन्द्रसिंह बिष्ट के मार्गदर्शन के नीचे विशेष उत्खनन कार्य हुआ। धोलाबीरा का यह विस्तार लगभग उत्तर–दक्षिण 616 मीटर और पूर्व–पश्चिम 770 मीटर 1½कि. मी. लम्बाई में यह पूरा शहेर एक घेराव क्षेत्र में फैला हुआ है। धोलाबीरा का शाब्दिक अर्थ होता है धोला अर्थात सफेद और वीरा का अर्थ होता है– कुॅआ ऐसा कुॅआ जो की काफी बड़ा हहोता है। लगभग 12 मीटर ऊॅची दीवालों वी किले बन्दी करने वाला इस नगर की रचना सिन्धु–संस्कृति के अन्य नगररों के समान ही है। यह नगर तीन विभागों में बटॉ हुआ है।

(1) राजदरबार या शासन अधिकारियों के रहने का स्थान (सीता–देउल)
(2) अन्य अधिकारियों को आवास (अपर टाऊन)
(3) सामान्य नगर निवासियों का आवास (लोअर टाऊन)

किला महेल, उनके नगर की दीवारों जो कि सफेद रंग हुआ है जो कि आज भी चमक रहा है। मैंचे स्वयं वहाँ जाकर इस महान नगर धोलाबीरा का सर्वेक्षण किया है नगर के चारों तरफ किले बन्दी की मजबूत सुरक्षा व्यवस्था है। यह दीवार मिट्टी छोटे–छोटे पत्थर (कंकरेट) और ईटों के छोटे–छोटे टुकड़े एवं झावॉ (ईटो में ज्यादा पक जाने के बाद गल कर काला हो जाता है उस प्रकार की ईटे आदि) आदि में से बना है। 2 जून सन् 2000 ई. को हम करीबन दिन के 1:00 बजे धोलाबीरा पहुँचे। लेकिन वहाँ के पुरातत्व विभाग के अध्यक्ष श्री बिन्ध साहेब नहीं थे। हमें वहाँ के चौकीदार ने फोटो लेने से मना कर दिया। लेकिन श्रीमान गढवी शम्भुदानजी ने बाहर–बाहर से हमें फोटो लेने के लिए कह दिया। हमने वहाँ की सभ्यता को अपने कैमरे में कैद कर लिया। राजमहेल (सीताडेउल) किले के मध्य भाग में ऊँचाई वाली जगह नगर के प्रमुख शासक के रहने के लिए महेल थे। जो एक मजबूत किले से अत्याधिक सुरक्षित थी। इसके चार प्रमुख शासक के रहने के लिए महेल थे। पत्थर के स्तम्भों पर उत्कीर्ण, उत्तम कोटि का है जो कि वास्तुकला का बेलोड़ नमूना दिखाता है। महेल में पानी की टॉकी और भुगर्भ की अच्छी खासी व्यवस्था रूपी गटर और नल है। यहीं पर एक बड़ा सा स्नानागार भी है और इसके पास ही खेलने–कुदने का एक छोटा सा मैदान भी है। 'आर्कियोलाजिकल सर्वे ऑफ इण्डिया' के मुख्य नियामक श्री आर. एस. बिष्ट विश्वास व्यक्त करते हुए कहते है कि ''ऐसा हो सकता है एक दिन ऐसा जरूर होगा आदि।'' उनके अनुसार 5000 वर्ष पुरानी संस्कृति से छूता हुआ काफी सामग्री यहाँ पर उपलब्ध है। धोलाबीरा के विकास के लिए सन् 1998 ई. में उद्योगमन्त्री सुरेशभाई मेहता ने धोलाबीरा की मुलाकात की थी और उसके विकास के लिए 28.26 (अट्ठाइस लाख छत्तीस हजार) रूपया मंजूर भी किया था।

धोलाबीरा का विकास किस रूप में हा सके इसके लिए 'टाटा कन्सल्टन्सी सर्विसिजे प्रोजेक्ट रिपोर्ट' तैयार किया है जो सरकार का सौपने के लिए तैयार भी है। खडीर में सैंकडों हजारों वर्ष से बना हुआ अनेक तालाब भी मौजूद है। कोई–कोई इसे हड़प्पीय–कालीन तालाब, तो कोई–कोई इसे, क्षत्रपों के द्वारा बनाया हुआ मानते हैं। उत्तर कोटि के नगर के अवशेष हैं, जिसमें धनी सम्पन्न के लोग रहते हों गे। अधिकारी वर्ग के लोग भी रहते थे। कारण कि यहाँ पर 2 से 5 चौरस फुट वाला मकान भी मिला है। इस नगर का मजबूत रक्षणात्मक किले वाली दीवाली भी है इसके चारों तरफ खुली जगह भी है। इन नगरों में सुव्यवस्थित गलियों की रचना का कोई सबूत नहीं मिलता है। ऐसा विदित होता है कि उनका नाश हो गया हो गा। यहीं की एक मकान (इमारत) में ओरड़ी और सीढ़ी भी देखने को मिला है। उसके एक भाग में एक कुँआ भी है। लगभग 300 मीटर के विस्तार क्षेत्र में यह उत्तम कोटि के नगर का विस्तार है। जिसे ऊपरटाउन अर्थात् ऊपरी शासक व अधिकारी वर्ग के लिए बनाया गया हो गा। नगर के तीसरे भाग में भाग में निम्न कोटि के नगरों के अवशेष देखने को मिलते है। जिसे हम अंग्रेजी में लोअर टाउन(Lower Town)भी कह सकते हैं अर्थात सामान्य वर्ग के लोगों के लिए। इन नगरों में श्रमिक वर्ग एवं कारीगर वर्ग रहता रहा होगा। इस विभाग में हाथों के द्वारा बनाये गये ईटो के मकान हैं जो कि अधिक सफाई में नहीं बने हैं यहाँ से जो मिट्टी के बर्तन मिले है वे लाल या गुलाबी रंग के हाथ के बनावट के है। वहीं से घरेड़ा बनाने की बड़ी दुकानों की हार मिली है जिससे सिद्ध होता है जरूर यहीं पर कारीगरों एक श्रमिक वर्ग का निवास स्थान था।

उत्खनन में मिली हुई अवशेष रूपी वसीहत के उपर से मालूम होता है कि व्यापार–वाणिज्य का एक बहुत बड़ा केन्द्र रहा होगा। पत्थर का बना हुआ, ताँबा के गलाने की भट्ठी के दांतिया (हंसिया) वगैरह मिले है। इन सभी अवशेषों को देखने से पता चलता है कि यहाँ के लोग काफी सुखी – सम्पन्न थे। सिन्धु–संस्कृति में से मिली यह चित्रलिपि (इसकी फोटो कापी हम दे रहे है अध्याय के अन्त में) जैसे लिखने की पद्धति भी मिलती है। थोड़े अक्षरों में भिन्नता भी है यह लिपि पढ़ने के बाद ही पता चल सकता है कि यह किसकी लिखावट है। अभी–अभी हाल ही में कलकता के मौर जिले से लगभग 40 कि. मी. दूर चन्द्रकेतुगढ़ में सिन्धु–संस्कृति के अवशेषों के साथ ही साथ, अनेक वंशों के शासन काल के तमाम महत्वपूर्ण अवशेष प्राप्त हुए हैं। जिन्हें गॉव वाले अज्ञानता वश उन तमाम मूर्तियों को विदेशियों के हाथों में बेच दिया है। लेकिन अब वहाँ पर 'आर्कियोलाजिकल सर्वे ऑफ इण्डिया' ने (भारतीय पुरातत्व विभाग) इनत माम अवशेषों को अपने हाथ में ले लिया है और वहाँ पर उत्खनन कार्य भी शुरू करवा दिया है। काफी बड़ी मात्रा में यहाँ अवशेष मिले हैं जो हमें कच्छ के धोलावीर में मिले हुए अवशेषों की याद दिलाते है। इसी तरह सिन्धु घाटी के अवशेष काफी बड़ी मात्रा में मध्यप्रदेश के दमोह जिले में 10,000 (दस हजार) वर्ष पुरानी सभ्यता भुगर्भ की गोद में दबी पड़ी है। दमोह जिले के संग्राम पुर के पास कलचुरी कालीन एवं रानी दुर्गावती के समय के मन्दिर, महेल, आदि पुरातात्विक अवशेष भी भरे पड़े हैं। सिंधु –संस्कृति के काफी अवशेष दमोह के संग्रामपुर के बावन–बजारिया के पास भरे पड़े है।

3. पथिक, दीवाली विशेषांक, 1999, ई. सुभाष ब्रह्म भट्ट का लेख, पृ. 19।
4. चैन कुन्डु, पश्चिमी बंगाल, Zee News, 18 May, 2000. Time 1.15 PM, जिला कोर, चन्द्रकेतुगढ़ पत्रकार श्री तपन घोष।
5. वहीं, श्री अजयदास व श्री तपन घोष के विवरण के मुताबिक।
6. Zee News (समाचार) रात को 8 बजकर 15 मिनिट पर, रनसल 12, 1999 (12/7/1999)

जिस तरह यहाँ पर (धोलाबीरा) सिन्धु–घाटी सभ्यता के अवशेष मिले है उसी तरह कलकजत्रत्ता–हबड़ा के मौर जिले के चन्द्रकेतु गढ़ में भी तथा मध्य–प्रदेश के संग्रामपूर के बावन–बजारिया के पास काफी बड़ी मात्रा में पुरातात्विक अवशेष भरे पड़े हैं। धोलाबीरा की सिंधु संस्कृति की लिपि का रहस्योउद्घाटन राष्ट्रीय तथा अर्न्तराष्ट्रीय स्तरों पर अनेक प्रयत्नों में हुआ हैं, परन्तु

सर्वमानस्वरूप और निष्पक्ष रूप से बना नही । यहॅा पर लगभग 600 वर्षा तक हड़प्पीय लोंगो के बसने का नगर रहा होगा । ऐसा अनुमान किया जाता हैं कि कोई ईश्वरीय आफत के कारण ही इस नगर का विनाश हुआ होगा । मेरे मतानुसार(डॉ.(प्रो.) चन्द्रिकासिंह सोमवंशी) धोलाबीरा में कोई बड़ा भयंकर तूफान ,चक्रपात यानी वावाजोड़ा , प्रलयकारी भूकंम्प इन सभी के साथ आया होगा ,जिससे धोलाबीरा जल–प्रलय में विलीन हो गया होगा । हजारों लाखों वर्ष पहले वहॅा समुद्र अपने चपेट में ले लिया होगा और वैसे कच्छ तो भूकम्पीय स्थल है ही । धोलाबीरा को भंयकर प्रलयकारी भूकंम्प ने बर्बाद कर दिया होगा । धोलाबीरा का समय ई.सन् पूर्व 2500 से ई सन् पूर्व 1900 निश्चित करने में आया हैं । यही पर हड़प्पीय काल की संस्कृति के बादी की संस्कृति के अवशेष भी मिले हैं । धोलाबीरा में अभी भी संशोधन चालू हैं इससे क्या निश्चित अनुमान निकले गा । कुछ कुछ नही जा सकता । हिदुस्तान और पााकिस्तान के बॅटवार के बाद सिन्धु –संस्कृति या हड़प्पीय–सभ्यता का मिला हुआ यह एक मात्र बड़ा नगर हैं । अभी थोड़े समय पहले की बात हैं कि धोलाबीरा के एक दम पास में कुछ हड़प्पीय–स्थल भारत सरकार के उपग्रह के सब लाइट ने ढूँढ निकला हैं ।

कच्छ में भी प्रागौतिहासिक और आद्यौतिहासिक काल के अवशेष भरे पड़े है । आज तक लगभग 60 जितने बसाहतों के अवशेष यही से मिल है । भचाऊ तालुका (तहसील) में स्थित शिकारपुर , कानमेर की सभ्यता नखत्राण तालुका (तहसील) में स्थित नेत्रा , कुरून की सभ्यता देशलपुर , सुरकोटड़ा तथा धोलावीरा आदि स्थलों से जो पुरातात्विक अवशेष मिले है उनसे पता चलता है कि सिन्धु – सौराष्ट्र तक इस संस्कृति का विकास रहा हो गा । यहॅा से मिले हुए अवशेषों से पता चलता कि एक समय सिन्धु से कच्छ तक कोई मार्ग जरूर विकासित रहा हो गा । ऋग्वेद के सातवे मण्डल में सरस्वती नदी के पर्वत शिखरों से निकल कर समुंद्र मे जाकर मिलती है और जो पवित्र , शुध्द व प्रवाह मार्ग वाली बताई गया है :–

एव अचेतत सरस्वती नदीनां

शुचि : यन्ति गिरिभ्प आ समद्रात । (ऋगवेद स : 6: 95 – 2) ।

अर्थात – सरस्वती को सात बहेनों वाली शाखावाली और सिन्धुमाता समुद्र की माता के रूप में वर्णन करने में आया है । यजुर्वेद के वाजसनेयी संहिता में सरस्वती को पॉच मुखों वाली बताया गया है :–

आं यत साक यशसो वावशना : सरस्वती
सप्तधी सिन्धुमाता । (ऋगवेद स 7: 36 : 6)

गुजरात में अनेक युनिवर्सिटियों ने केन्द्र तथा राज्य सरकार के पुरातत्व विभाग के विद्वानों के द्वारा गुजरात भर में संशोधन , प्रवासन और उत्खनन कार्य हुआ है । आज तक एक सर्वेक्षण के मुताबिक गुजरात में 500 (पॉच सै) जितने सिन्धु – सरस्वती के अवशेषो से संबन्धित स्थल मिले है । इस प्रकार सभी में लोथल, सोमनाथ,श्रीनाथगढ़ – रोझड़ी,पादरी गोहिल की,नागेश्वर,नगवाड़ा,लोटेश्वर,सुरकोटड़ा,(कच्छ जिला), गढ़बाडी–बाड़ी और कच्छ के एक बड़े रण में स्थित खडीर बेट नजदीक धोलाबीरा–कोटड़ो आदि जाना जा सकता हैं । महानदी के प्रवाह के बारे में सरस्वती नदी का उदभव भारतीय भुस्तरीय सर्वेक्षण के भुस्तशास्त्री अधिकारी दूसरे आर.डी.ओल्धामे ने भी लिखा हैं कि महानदी सरस्वती हिमालय में से निकलकर पंजाब ,हरियाणा राजस्थान के उत्तर–पश्चिम के थर के रण के वाले प्रदेश से होती हुई सिन्धु नदी में गिरती हैं और वहॅा से गुजराती हुई कच्छ के रण के ऊपर होते हुए समुद्र में मिलती थी , । इस प्रकार श्री आर.डी.ओल्धान ने बताया है कि धोलाबीरा रापर से 95 कि.मी. दूर स्थित हैं । आज से करीबन 5000 वर्ष पूर्व धोलाबीरा एक आदर्शनगर के रूप में था । यहॅा के नगर का आयोजन व्यवस्थित स्थापन्य कला और जल–संग्रह अति उत्तमकोटि की थी । यहॅा पर सिन्धु–खीण के तरफ से लोगों का आगमन हुआ होगा । उनके तांबा के काम , मिट्टी के बर्तन बनाने की कला,पत्थर गढ़ने की कला और निश्चित माप की ईंटों को बनाना आदि वे लोग पूरी जानकारी रखते थे । वे लोग इन सभी कलाओं में पारगंत एवं निपुण थे । इन लोगों की संस्कृति हड़प्पीय संस्कृति के रूप में बोला जाता है । इस प्रकार की संस्कृति से सम्बनिधत अवशेषों मोहनजोड़ो (सिंन्धु–पाकिस्तान–हड़प्पा(पंजाब–पाकिस्तान) और राखी गढ़ी हरियाणा) मुख्य हैं । यहां के अवशेषों को देखने से पता चलता है कि नगर की रक्षा के लिए मजबूत किते बन्दी थी। इनका प्रवेश द्वार कलात्मक था ।

धोलाबीरा हस्तकला कांरीगरी व्यापार और वाणिज्य का मुख्य केन्द्र था । अन्दाज–पत्र पहली सदी तक रहने के बाद अपने– अपने मकानों में थोंड़ा परिवर्तन किया होगा । पर 'आर्कियोलोजिकल सर्वे ऑफ इण्डिया' दिल्ली सरकार की तरफ से भी उत्खनन कार्य हुआ जिसमें प्राप्त अवशषों,मिट्टी के बर्तनों कलाकारी किये । हुऐ गढ़े पत्थरों, उनकी लिखने वाला बोर्ड आदि यही से उपलब्ध हुए हैं । जिनकी लिपि को अभी तक अच्छी तरह से पढ़ा नही जा चुका हैं क्योंकि इस प्रकार के लिखने की पद्धती और कहीं से अभी तक नहीं मिली हैं । धोलाबीरा के उत्खनन के बाद विश्व के प्रवासी नक्शों में अपनी एक अनोखी छवि रहा हैं । अनेकों अभ्यासियों ,संशोधको,इतिहासकारों एवं अनकों पुरातत्वविदों का यहॅा पर आना हुआ हैं । इस जगह के विकास के लिए सरकार के तरफ से रहने व ठहरने के लिए मकान व खाने–पीने के लिए होटलों का भी निर्माण होगा। ऐसा सरकार की तरफ से प्रयास जारी है 'इसके दूसरी तरफ म्युजियम (संग्रहालय) बनाने का काम चालू है। भुज से खावड़ा 60 कि. मी. होता है' यह मार्ग (रोड़) बनाने को काम भी शुरू ही है। इससे धोलाबीरा जाने के लिए दूसरा 35 से 40 कि. मी. होता है यह मार्ग (रोड़) बनाने को काम भी शुरू ही है। इससे थोड़े समय ही में धोलाबीरा पहुंचने के लिए 100 कि.मी. का अन्तर भी होगा। इससे प्रवासियों का आने–जाने के लिए सुविधा भी होगी। अभी हाल में यदि रात्री रूकना है तो रापर में ही रात रूका जा सकता है। रापर से धोलाबीरा बस (ॅण्ज्

बस व प्राइवेट बस) द्वारा भी जाया जा सकता है। कच्छ इस माइने में सौभाग्यशाली रहा है। यहों के 50 से 60 स्थलों से सिन्धु संस्कृति का उजागार करने वाला सम्पूर्ण नगर का ढॉचा सही सलामत मिला है जो देखने ही लायक है।

7. हड़प्पीय संस्कृतिःज वैदिक संस्कृति by सुमनबेन एच. सुमनबेन एच. पंडया, पुरातत्व विज्ञानी, 201, राजमंदिर अेपार्टमेन्ट, चांपानेर सोसायटी, उस्मानपुरा, अहमदााबद –13 पथिक, दीवाली विशेषांक अंक, पृ. 28।

8. on Probebal Mengis in the Punjab and it is Ruwers & "A Historico&Geographical Study" Journal of Asiatic Society of Bengal, Vol. 55, pg. 312-343, by R. D. Oal Dham, 1886.

9. कच्छ, कच्छी और कला (गुजराती) प्रमोद जे. जेठी, श्री लीखन्जा प्रकाशन, भुज, पृ. 45।

प्राचीन काला की यह नगर रचना वर्तमान औदयोगिक शहरों को भी मात कर देती है। प्राचीन आर्किटेक्चर का सुन्दर एवं सर्व श्रेष्ठ नमुना धोलाबीर की सिन्धु संस्कृति में देखा जा सकता है। वैसे सिन्धु संस्कृती दुनिया की सबसे पुरानी संस्कृती है। खडीर कच्छ प्रदेश का एक ऐसा भाग है जो चारों तरफ रण से आंच्छादित (घिरा) है। इस रण में एक टापू है। इसी भाग में धोलाबीर एक नगर के रूप में बसा हुआ है। यह कच्छ के अनेक और गॉवो से अलग–अलग है और अन्य तमाम शहरों व विकसित भागों से कोसों दूर है। इसलिए यहॉ के सामान्य लोगों की रोजी–रोटी का गुजारा मात्र खेती पर ही निर्भर करता है। सन् 1970 ई. में अकाल के समय वहॉ पर सरकार की तरफ से राहत कार्य चलाये गये थे। पर राहत कार्य चल रहा था तब वहीं पर काम की देख–रेख कर रहे श्री शंभुदान गढवी को मटके के पुराने चित्र वाले टिकरे मिले और एक हडप्पन मुद्रा भी मिली। यहॉ कोई पुरातात्विक अवशेष मिल सकने की सम्भावना है यह समझ कर यहॉ खुदाई करवायी गयी। और जब अधिक मात्रा में अवशेष मिलने लगे तब इसकी सूचना भुज शहर के 'आर्कियोलोजिकल सर्वे ऑफ इण्डिया', गुजरात शाखा (पुरातत्व विभाग) को दी गयी। गुजरात पुरातत्व शाखा ने केन्द्र सरकार को सूचना दी। धोलाबीर की प्रथम खुदाई सन् 1970 ई. से 1972 ई. में दिल्ली के पुरातत्व विभाग व्दारा किया गया।

मुख्य खुदाई का कार्य 1990 ई. से सन् 1993 ई. के बीच शुरू हुआ। यह कार्य पुरातत्वविद श्री बिष्ठ व उनके साथियों व्दारा श्री गणेश हुआ। यह सिन्धु संस्कृती का विराट नगर तीन भागों में बॅटा हुआ था,जिसका वर्णन हमने उपर किया है। सम्पूर्ण भारत में यह सिन्धु संस्कृती (हडप्पीय संस्कृती) की सबसे बडी खोज है। यह नगर मिटट्ी के टीले से दबा पडा था किसी समय यहॉ प्रलय या भयंकर तूफान (वावाजोडा–ब्लबसवदमद्ध आया होगा या फिर भयंकर बडे से बडा भूकम्प आया होगा जिससे धोलाबीर को तहस–नहस (विनाश) कर दिया होगा। जिससे यह सम्पुर्ण नगर धाराशाही हो गया होगा। यह नगर लगभग 1[1½] कि.मी. तक के विस्तार में फैला हुआ है। 770 मीटर पूर्व –पश्चिम एवं 616 मीटर उत्तर–दक्षिण लम्बाई चौडाई वाले किले के बीच तीन भागों में बसा यह नगर आज की आदयोगिक नगरियों को मात कर देता है। मूख्य नगर भूज से रापर तक की दूरी 135 कि.मी. और रापर तहसील से 95 कि.मी. की दूर पर धोलाबीर अपनी ऐतिहासिक विरासत संजोये प्रहरी की भांति खडा हुआ है। धोलाबीरा से इस नगर तक पहुॅचने के लिए 3 कि.मी. कच्चा रास्ता चलना पडना है। ऐसा अनुमान लगाया जा सकता है कि आज से करीबन देढ–दो लाख वर्ष पूर्व सम्पूर्ण कच्छ समुंद्र में विलीन (जलमग्न) रहा होगा और काफी समय बाद फिर एक टापू के रूप में बाहर आया होगा। यही कारण है कि आज सामुद्रिय प्राणियों के अवशेष कच्छ की पावन धरती में से प्राप्त होते हैं। कई लाख वर्ष पहले के समुद्री जीवाशय कच्छ में से मिले हैं।

हडप्पीय–संस्कृती (सिन्धु–संस्कृती) के अवशेष मोहनजोदडो, हडप्पा, रापरगढी, पाबुमढ, नानीरायण, नेत्रा और नवनील सौराष्ट्र आदि स्थानों से सिन्धु संस्कति के अवशेष मिले हैं उनमें से धोलाबीरा ही अपने विशालतम् नगरों में से था जिनके कि राज्य के व्यवस्थापक का महल व किला भी सामिल है। नहाने का हौज, पानी की टॉकी, नगर तक पानी पंहुचाने के लिए नहरें, दुकान,व्यवस्थित मकान, मनोरंजन के मैदान्, मिटट्ी के पांच–छः आकार वाले बर्तन मणका, मिटट्ी के पत्थर आदि। यहॉ तक कि उस समय के मनुष्य के पैर के निशान भी धोलाबीर से प्राप्त हुए है। धोलाबीरा नगर–महल को मजबूत किले से सुरक्षित किया गया है। दूसरा किला इस महल व उपरी नगर की सुरक्षा के लिए बनाया गया है। 5000 वर्ष पूर्व इस शहर को दुश्मनों के हमले से सुरक्षित रखने कि दृष्टि से बनाई गई थी।

महल में पानी की एक बडी टॅकी है जिसमें से विशाल नाले व्दारा नदी का पानी लाने की सुविधा है आगे नाला भूगर्भ की गोद में होने से किला बन्द होने पर भी पानी का प्रवाह चालू रहता है। नहाने के लिए एक बडा स्नानागर (हौज) भी है। किले के बीच में ऊपर की और एक विशाल मैदान है जो शायद मनोरंजन व खेलकूद के लिए बनाया गया होगा। मैदान की एक ओर महल में बैठे लोग और दूसरी तरफ नगरजन बैठ सकें। महल के कुछ दूर उपरी नगर है जिसमें व्यापारी व धनवान लोग रहते होंगे। समग्र शहर में सुन्दर गटर व्यवस्था भी है। अलग–अलग व्यवसाय करने वालों की दुकाने भी कतारों में देखी गयी हैं। इसके अलावा नगर से दूर नौकरों और श्रमिकों के मकान हैं। यहॉ पर कच्चे, पक्के, छोटे–बडे मकान भी देखने को मिलते हैं। यहीं से हथियार, मनके, सोना–चांदी के आभूषण, हडप्पन–मुद्राऍ, तौल–माप के साधन आदि प्राप्त हुए है। किन्तु आश्चर्यजनक बात यह है कि किसी देवी–देवता का मन्दिर या प्रार्थना स्थल नहीं मिला है।

इन सभी चीजों के अलावा यहॉ के समाधि–स्थल ऊपर दक्षिण की तरफ और पूर्व–पश्चिम व इर्शान नेत्रृतय की ओर आयी हुई मिली है। जो कि यहॉ की बस्ती को अलग–अलग सूचना देती है। यहॉ पर मानव अवशेषों के स्थान पर बर्तन निकले हैं। जिससे ऐसा माना जा सकता है कि अग्नि संस्कार के बाद राख गाडने की प्रथा होगी। किन्तु महल में आई पानी की टांकी ऊपर उत्खनन कार्य के दौरान एक सम्पूर्ण हार्ड–पिन्जर (नरकंकाल) पद्मासन की अवस्था (स्थिती) में मिला है। इसके अलावा पास कमण्डल व साधु–सन्यासियों के पास जो होती हों, ऐसी वस्तुएं मिली हैं। जो कि वर्तमान में दशमान गोस्वामी समाज के पुरूष व्यक्ति का स्वर्गवास हो तब उनकी समाधि के साथ रखी जाती है ऐसा माना जाता है कि उस समय भी भगवा (लंगोटी) धारण करने वाले या साधु को पद्मासन में बिठाकर समाधि दिलाने की प्रथा प्रचलित रही होगी। उसे जलाया नहीं जाता रहा होगा। कुछ लोगों

का अनुमान है कि यह शहर नदी किनारे नहीं बसा हुआ था बल्कि सिन्धु किनारे बसा हुआ एक बन्दरगाह है, किन्तु अभी समुद्री बन्दरगाह के अवशेष नहीं मिले हैं जैसे कि लंगर बडा पोर्ट आदि। इसके अलावा एक बोर्ड सिन्धु–लिपि में मिला हैं जिसकी भाषा समझ में नहीं आती है। इस प्रकार का लिखा हुआ बोर्ड, मात्र धोलाबीर में से ही मिला है। मेरे मतानुसार यह धोलाबीर नगर सिन्धु–नदी के किनारे पर ही बसा हुआ था जो कि समय के प्रवाह के साथ–साथ इन नगर को अपने में समेटकर जलमग्न कर दिया होगा।

धोलाबीरा की सिन्धु कला –

धोलाबीर की नगर रचना अपने स्थापत्य–कला के लिए भी काफी प्रसिध्द है। महल के दरवाजे की सुन्दर कमान, दोनों ओर पत्थरों की खुदाई महल के स्तम्भ के सुन्दर गोल, चौरस आदि अलग–अलग प्रकार के घिसे, हुए पत्थर के बीच में छेद किए हुए, जो स्तम्भ को खडे करते हुए, एक दूसरे को छोद से जोड कर मजबूत किया जा सके। पत्थरों की मात्रा मिटट्री का ही गारा देकर (जोडकर) सम्पूर्ण नगर की रचना की गई है। जो सीमेन्ट व चूने के गारे के बिना आज तक भी टिके हैं। अच्छे किस्म की मिटट्री को पानी में गला कर खूब रौंदा जाता था जिससे कि मिटट्री लबाब हो जाता था और फिर थोडा गाढा हो जाने पर मकान की जुडाई होती थी। सदियों से इस किस्म की जुडाई का प्रयोग होता आ रहा है। नदी के किनारे एवं हिमालय के देवदार की लकडी का उपयोग जो छत की लकडी के रूप में किया जाता था। खिडकी दरवाजों और नावं बनाने के लिए होता था। धोलाबीर के पास वाले गॉव में छपपर व चन्नियों में बडेर का काम अच्छे किस्म की लकडी ही दे रही है जिसका मैने फोटो ग्रफी भी किया है। धातु में तॉबे का उपयोग, पत्तरा, हथियार आभुषण आदि बनाने में होता था।

चांदी–सोना व सीसा बहुत ही कम प्रमाण में मिल है । पत्थर शंख, सीप, सोना–चांदी हडडी आदी में से गहने बनाये जाते थे। इन गहनों का निर्यात भी होता था। यहीं पर एक आभूषण से (गहनों) लदी हुई एक स्त्री की मुर्ति भी मिली है। जो कि मातृ–पूजा का एक अनोखा रूप देखने को मिलता है। यहॉं सूती कपडे का सुन्दर बाजार भी था। ईराक के लोग इसे सिन्धु कपडा कहते हैं निर्यात भी यही से होता था। ग्रीक के लोग इस कपडे को सिंधन कहते थे। जिसका ग्रीक भाषा में उल्लेख है वह कपडा आज की खादी के कपडे की किस्मों के जैसा ही होता था। यहॉं के लोग मिटटी व्दारा मिटटी के बर्तनों के अलावा बच्चों के लिए सुन्दर–सुन्दर खिलौने आदी बनाते थे गाडी बैल, पक्षी, हाथी, घोडा आदी बनाते थे। जो आज के प्रजापति जाति की विशिष्टता है। सन 1997 ई के जनवरी महिने में जो उत्खनन धोलाबीरा में हुआ उससे काफी अवशेष (नई वस्तुऍ) मिली है। एक तो जलाशय में 6 फुट खुदाई कार्य करने पर दोनों तरफ सडक में से खुदाई कार्य वाली सीढीयॉं निकली है जिसमें सबसे महत्व कुॅंऑ है। इस कुऍं का व्यास चार मीटर है। इससे यह साबित होता है कि आज के गावों में मिलने वाली कुओं की संस्कृति 5000 वर्ष पहले की है। कच्छ की पावन भूमि मे छिपे इस ऐतिहासिक खजाने ने आज कच्छ को अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर प्रख्यात बना दिया है। काठ(लकडी) के बने हुए कुंए भी उत्तर प्रदेश के बहुत से जगहों पर भी मिले है। इस कुॅंए का हमने विगतवार सर्वेक्षण किया है इसके ऊपर लोहे की जाली वाला एक डक्कन लगा हुआ है सामने पानी निकलने के लिए एक नाली है।

श्री शम्भुदान गढवी एक अच्छे मिलनसार प्रवृति के व्यक्ती है। उन्होंने हमें वहॉं पर फेले पुरातात्विक अवशेषों के बारे में विस्तार से बताया। वहॉं पर मिला हुआ कुंआ है। ऐसा कुंआ मैने उत्तर प्रदेश में भी कहीं नहीं देखा। पत्थरों से उस कुंए की जुडाई हुई है। कुंए के चारों तरफ महल स्नानागार , हौज आदी की पत्थरों की दीवारें हैं। कुंआ साफ करके के लिए कुंए के पास एक छोटा सा नाली बना हुआ है जिससे कुंए का पानी बाहर निकाल कर कुंआ साफ करने के काम में आता था। धोलाबीरा गॉव के पूर्व दिशा में एक ऊॅंचे डुंगर (पहाडी) पर यह पूरा नगर बसा हुआ था। किले की दीवारें काफी अच्छी स्थिति में मिली है। दीवाल का जीधोद्वार करके उसे सलामत राखा गया है। मनोरंजन का बहुत बडा मैदान भी मिला है। वहॉं पर एक पावे (खम्भे) का खण्ड मिला है कि सफेद पत्थर का बना हुआ है, काफी बडा है और विशाल भी है हमें हाथीदांत, शंख, और लाख से बनी हुई कंगन , चूडी आदि के टुकडे भी देखने को मिले। पत्थर के धारदार चाकू के रूप भी देखने को मिले। कान में पहनने के कुण्डल, और अन्य गहने, आभूषण कभी देखने को मिले। कलकत्ता में बने शंक की चूडी जैसे ही यहॉं पर मिली शंख के कंगन के टुकडे है। मिटटर के अनेक किस्म के बर्तन (घडा, मटका, कूडा मसाला पीसने का सिलबटटा आदी) आदी भी देखने को मिले। यहॉं पर, कोई समय यह नगर बडा ही आबाद हालत में होगा। काफी समृध्दी वाला नगर रहा होगा। इसके आस –पास में नारायणपर गॉव और कई छोटे–छोटे गॉव रण में बसे हुए है खडीर का 12कि.मी का रण तो काफी भयानक लगता है। दूर–दूर तक एक भी झाड– पौधे नही दिखाई देते। यूॅं समझ लिजिए कि एक प्रकार का यह मरूसीलीय प्रदेश का एक भाग है। खडीर का 12 कि.मी का रास्ता पार करने पर फिर झाड पौधे एवं पहाडियां छोटी–छोटी दिखाई पडती है रास्त में तो कहीं–कहीं ऐसा देखने में लगता है कि मानों हम उत्तर–प्रदेश के किसी बडी नदी जो जंगली प्रदेश से गुजराती हो, और हम उसके किनारे–किनारे चल रहे हों। बलुआ मिटटी की खेती की सूती जमीने दिखाई पडती हैं। उत्तर–प्रदेश के जंगली नदियों के कददार जहां से शुरू होते हैं ऐसा ही दृश्य देखने को मिलता हैं यह हम उत्तर प्रदेश के पूर्वी जिले गोण्डा, फैजाबाद, बहराईच, बाराबंकी, गोरखपुर,बस्ती, लखनऊ, आदी के आस–पास में पडने वाले नदियों के आस–पास के प्रदेश के जैसे लगते हैं। इस 12कि.मी के खडीर इलाका में चौमासे में पानी भर जाता है। दूर–दूर तक कोई गॉव–गिरावं नजर नहीं आता। एक दम वीरान, उजाड सा यह रण प्रदेश है। "धन्य हैं! वहॉं पर बसे हुए लागों को, उन स्नेहमयी बहनों को; उन ममतामयी माताओं को जिनके ऑचल में , कच्छ की पवित्र–पावन भूमि में, यह संस्कृति काफी फूली–फली।" रापर से धोलाबीरा जाने का मार्ग उत्तर की तरफ से होकर जाता है। धोलाबीरा गॉव से ठीक पश्चिम 2या 3 कि.मी की दूरी पर से रापर वाला सडक पूर्व की तरफ जाता है वहॉं पर धोलाबीरा गॉव बसा हुआ है। रास्ता इतना घुॅंमावदार उॅंचा–नीचा है कि यदि ड्राईवर ध्यान से गाडी न चलो तो एक्सीडेन्ट के चान्स ज्यादा रहते है। धोलाबीरा पर मिली हुई सिन्धु संस्कृति अपने आप में विशालतम है शायद ही कहीं इतनी बडी मात्रा में ऐसे दुर्लभ–सभ्यता के अवशेष महल, दुर्ग, कुंआ, गहने, वाणिज्य व्यापार, खेती,

मैदान आदी–आदी मिले हों।

धोलाबीरा गॉव से करीबन 1 कि. मी. की दूरी पर कुछ उँचे डूँगर जैसे ही है। वहां की निचले भाग में कई बोर हैं टसूब्बेज लगभग 8 या 10 होंगे। पानी एक दम मीठी है। जो पानी शहर से सप्लाई होता है वह, और कुँए के पानी में काफी अन्तर है। कुँए का पानी बहुत ही मीठा है। साधनों के अभाव में आज भी वहॉं कई गॉव अभी भी पिछड़ी अवस्था में हैं। नड़ियॉं वाले व घास–फूस के मकान ही देखने को ज्यादातर मिलते हैं। झाड़–पेड़ धोलाबीरा गॉव में कोई खास नहीं हैं। खेती जोरदार है जहॉं–जहॉं पर पानी है। धोलाबीरा की संस्कृति अपने आप में एक मिसाल है, कच्छ की पावन–भूमि का गौरव है जिसे अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर ख्याति प्राप्त है मैं अर्थात लेखक धोलाबीरा–कोटड़ा की सिन्धु–संस्कृति को बारम्बार नमन् करता हूँ! नमन करता हूँ !!नमन करता हूँ !!! डॉ. (प्रो. चन्द्रिकासिंह सोमवंशी रिसर्च स्कॉलर)।

Various evidences of Survey of Dholaveera States that this Town was excellent Amazing and Flourshed with the Literature, Culture, Philosophy, Religion, Town Planning, Economics, Business Fashion, Jewellery and it Depicts the civilization of Ancient Times.

Personally I have verified and surveyed this place (Dholaveera Nagar] Vally of the Kutch) very oftern, Kutch is fully explored and one tow sited excavated which would prove the priority of the Kutch Harappan over that as Saurashtra. Dholaveera pottery perforated. Human, skeleton, Mohta, Lipi, Chakki, Msolithic and copper objects.

The Culture, Literature, relition, Philosophy relies and eminent of Town-Planning of Dholaveera Nagar are state. Have been reported from the surface at Desalpur (Kutch) and Dholaveer. It is regarded as a very promising site, On the left of the morvi, rever, Nakhatrana Taluka and Todia Timbo in Lakhapat Taluka.

Chandrikasinh Somvanshi
Research Scholor,Teacher's Fellowship in History , Adipur (Kutch).

Jashwantkumar Premjibhai Chandhari
Lunawadd, Panchmahal, (Gujarat)

Publish Research Article
International Level Multidisciplinary Research Journal For All Subjects

Dear Sir/Mam,

We invite unpublished Research Paper,Summary of Research Project,Theses,Books and Books Review for publication,you will be pleased to know that our journals are

Associated and Indexed,India

- Directory Of Research Journal Indexing
- International Scientific Journal Consortium Scientific
- OPEN J-GATE

Associated and Indexed,USA

- DOAJ
- EBSCO
- Crossref DOI
- Index Copernicus
- Publication Index
- Academic Journal Database
- Contemporary Research Index
- Academic Paper Databse
- Digital Journals Database
- Current Index to Scholarly Journals
- Elite Scientific Journal Archive
- Directory Of Academic Resources
- Scholar Journal Index
- Recent Science Index
- Scientific Resources Database

Review Of Research Journal
258/34 Raviwar Peth Solapur-413005,Maharashtra
Contact-9595359435
E-Mail-ayisrj@yahoo.in/ayisrj2011@gmail.com
Website : www.ror.isrj.org